RESEARCH PAPER

Research Review Journal of Social Science
e-ISSN: 2583-2867 | Vol-02 | No-01 | Jan-Jun 2022 | pp. 39-49
Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Bi-annual Journal

Material culture revealed from the antiquities obtained from the excavation of Gambhirwa Tola (Anuppur, M.P.)

गम्भीरवा टोला (अनूपपुर, म.प्र.) उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों से उद्घाटित भौतिक संस्कृति

*[1]Dr. Alok Shrotriya, [2]Dr. Jinendra Kumar Jain and [3]Dr. Mohan Lal Chadhar

[1]*Professor and Head of Department, Department of Ancient Indian History, Culture and Archeology, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (M.P.)*

[2]*Assistant Professor, Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (M.P.)*

[3]*Associate Professor, Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (M.P.)*

Abstract

Archaeological investigations of Darsagar Panchayat in Kotma tehsil area near Maikal mountain in Anuppur district of Madhya Pradesh and excavation at a site named Gambhirwa Tola was done by the authors. In the said archaeological expeditions, numerous antiquities have been found which are helpful in illuminating the ancient history of Anuppur region and connecting the lost links. There are several aspects included in the study of society. Generally, human society is represented in four areas – political, social, economic and religious. In archaeological exploration and excavation, material related to these four areas is broadly documented, analyzed and interpreted. In the detailed excavation, numerous antiquities have been found which reveal various aspects of human life of that time, on the basis of which an attempt has been made to reconstruct the past lifestyle of humans living in the area near Maikal mountain and its vicinity.

Keywords: *Excavation, Archaeology, Human, Material Culture, Antiquities, Pottery, Terracotta Sculptures, Ring Well*

Abstract in Hindi Language:

मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में मैकल पर्वत की समीपवर्ती कोतमा तहसील क्षेत्र में दारसागर पंचायत का पुरातात्विक अन्वेषण एवं गम्भीरवा टोला नामक स्थल उत्खनन लेखकों द्वारा किया गया। उक्त पुरातात्विक अनुसंधान में अनुपपुर क्षेत्र के प्राचीन इतिहास को प्रभासित करने एवं विलुप्त कड़ियों को जोड़ने में सहायक बहुसंख्यक पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। मानव समाज अपने परिवेश में विविध पक्षों को समाहित किए हुए होता है। आमतौर पर मानव समाज को चार क्षेत्रों या पहलुओं में निरूपित किया जाता है- राजनीतिक, सामाजिक,आर्थिक एवं धार्मिक। पुरातात्विक अन्वेषण एवं उत्खनन में मौटे तौर पर इन्ही चार क्षेत्रों से संबंधित सामग्री को प्रलेखित, विश्लेषित एवं व्याख्यायित किया जाता है। विवेच्य उत्खनन में तत्कालीन मानव जीवन के विविध पक्षों को सामने लाने वाले बहुसंख्यक पुरावशेष प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर मैकल के समीपवर्ती क्षेत्र में निवासित मानव की भूतकालीन जीवन-पद्धति के पुनर्निर्माण का प्रयास किया गया है।

Keywords: *उत्खनन, पुरातत्व, मानव, भौतिक संस्कृति, पुरावशेष, मृद्भाण्ड, मृण्मूर्तियाँ, वलय-कूप*

Article Publication

Published Online: 15-Jul-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Alok Shrotriya

Professor and Head of Department, Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (M.P.)

alokshrotriya[at]gmail.com

10.31305/rrjss.2022.v02.n01.006

© 2022 The Authors. Published by Research Review Journal of Social Science. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना

मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में 2013-14 में लेखकों द्वारा किए गए अन्वेषण में प्राचीन इतिहास से संबंधित अनेक पुरास्थल प्रकाश में आए हैं उनमें से गम्भीरवा टोला मुख्य पुरास्थल है। यह स्थल उक्त जिले की कोतमा तहसील में दारसागर ग्राम पंचायत अन्तर्गत स्थित है। कोतमा, रेलवे मार्ग से जुड़ा हुआ है जो रायपुर-शहडोल रेलवे मार्ग पर अवस्थित है। विवेच्य स्थल कोतमा स्टेशन से 15 किमी एवं अनूपपुर जिला मुख्यालय से 40 किमी दूरी पर है जो भौगोलिक मानचित्र पर 28^0 8' 19' उत्तरी अक्षांश और 81^0 51'51' पूर्वी देशांतर पर स्थित है। अमरकंटक से नि:सृत सोन नदी की सहायक केवई नदी अपने पश्चिमी मुहाने पर स्थित इस स्थल को अभिसिंचित करती है।[1]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस क्षेत्र में मानव सभ्यता के पल्लवन के प्रमाणों से मानवीय गतिविधियाँ प्रागैतिहासिक काल से ही प्रारम्भ हुयीं प्रकट होती हैं। जिसके प्रमाण विवेच्य स्थल के समीपवर्ती नर्मदा घाटी क्षेत्र में प्राप्त हुए हैं।[2] पुरातात्विक अन्वेषणों में खाद्य संग्राहक एवं आखेटक स्थिति के प्रागैतिहासिक मानव द्वारा प्रयुक्त एवं निर्मित औजारों एवं उपकरणों को प्रकाश में लाया गया है।[3] मानव जब मैदानी क्षेत्र में आया और समूह में निवास करने लगा तब वह लघुपाषाण उपकरणों में प्रवीण हो गया था। इस प्रकार के उपकरण भी इस क्षेत्र से प्रलेखित हैं।[4] पूर्ववर्ती अनुसंधानों में इस क्षेत्र की प्रागैतिहासिक संस्कृति के उदघाटन पर अत्यधिक बल दिया गया। प्रागैतिहासिक कालोपरान्त यहाँ सभ्यता की निरंतरता की पुष्टि हेतु और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता बनी हुई थी। छठी शताब्दी ईसवी पूर्व में यह क्षेत्र चेदि महाजनपद के अन्तर्गत शासित था। मगध साम्राज्य के उत्थान एवं विस्तार में यह नेदों द्वारा विजित कर लिया गया तदनन्तर मौर्य सामाज्य का अंग बना।

मौर्योत्तर काल में, विशेष रूप से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से शुरू होने वाली अवधि में, उत्तर भारत में राजनीतिक प्राधिकरण का विखंडन हुआ था और कई राज्य राजनीतिक परिदृश्य पर अस्तित्व में आए। इनमें से कुछ राज्य बहुत पहले से अस्तित्व में थे और प्राचीन साहित्य में वर्णित हैं जबकि कुछ अन्य नए राज्य थे। इस अवधि में इन राज्यों का अस्तित्व उनके सिक्कों से पता चलता है जो कई प्रकार की विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं। इनमें से कुछ राज्य राजतंत्रात्मक राज्य थे, क्योंकि उनके द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर शासकों के नाम हैं, जबकि कुछ अन्य जनजाति या गणतंत्र राज्यों द्वारा जारी किए गए थे क्योंकि ये सिक्के जन या जनजाति के नाम पर हैं। इस काल में त्रिपुरि, एरण, उज्जैन, कौशाम्बी आदि अनेक क्षेत्रों में स्थानीय शासन एवं नगर शासन प्रारम्भ हुआ। विवेच्य क्षेत्र में भी इस कालखण्ड में स्थानीय प्रभुत्व की सत्ता स्थापित हुई। अनूपपुर के समीपवर्ती उमरिया जिले के बान्धवगढ क्षेत्र में भी मघ वंश की स्थानीय राजसत्ता के प्रमाण मिलते हैं।[5] उक्त स्थानीय राजसत्ताएँ भारत के क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

गम्भीरवा टोला के समीप ही शिवलहरा नामक स्थान पर सात गुफाएँ हैं। इनमें से एक गुफा में अंकित शिलालेख में स्वामिदत्त नामक स्थानीय शासक का नाम उत्कीर्ण है। स्वामिदत्त के काल में मूलदेव द्वारा गुफाओं के निर्माण का उल्लेख शिलालेखों में प्राप्त होता है। इन शिलालेखों की लिपि और विषय-वस्तु को इस शोध-पत्र के प्रथम लेखक प्रो. आलोक श्रोत्रिय ने विस्तार से सम्पादित किया है। शिलालेखों में प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि पहली-दूसरी शताब्दी ईसवीं की है। उक्त नवान्वेषण से इस क्षेत्र के प्राचीन क्षेत्रीय इतिहास लेखन को महत्वपूर्ण दिशा प्राप्त हुई है। इन शिलालेखों से राजा स्वामिदत्त के साथ ही शिवानंदी, शिवदत्त, शिवमित, मोग्गलिपुत्र मूलदेव, अम्बा आदि के आपसी संबंधों और नामों का परिज्ञान हुआ है।[6] उक्त शिलालेख तत्कालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हैं। ईसा की प्रथम शती में इस क्षेत्र का स्थानीय राजा कुषाणों के अधीनस्थ रहा होगा। समुद्रगुप्त की दक्षिण दिग्विजय में कोसल का महेन्द्र पराजित हुआ था, संभवतः दक्षिण कोसल की विजय का मार्ग यही प्रदेश रहा होगा। समुद्रगुप्त ने दिग्विजय में विजित राज्यों को प्रत्यक्ष अपने नियंत्रण में नहीं लिया था बल्कि 'सर्वदक्षिणापथराजग्रहणमोक्ष' की नीति का अनुसरण किया। समुद्रगुप्त के पश्चात पाँचवीं शती ईसवीं में इस क्षेत्र पर मैकल के पाण्डु वंश राजसत्ता स्थापित हुई। बम्हनी (जिला शहडोल) नामक स्थल से उनके तीन तांबे के दान-पत्र प्राप्त हुए हैं। यह दक्षिण कोसल के पांडु राजाओं की शाखा थी।[7] सातवीं शताब्दी के दौरान, यह क्षेत्र हर्ष के साम्राज्य के अन्तर्गत समाहित था। कालान्तर में यह कलचुरी साम्राज्य में शामिल हो गया था।[8]

उत्खनन एवं उत्खनित स्थल का कालानुक्रम:-

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक द्वारा किए गए गहन पुरातात्विक सर्वेक्षण में दारसागर पंचायत के गम्भीरवा टोला क्षेत्र में कुल सात टीले पुरासम्पदायुक्त चिह्नित हुए। तीन टीलों में लगभग तीन से चार मीटर के आवासीय जमाव का अनुमान किया गया। प्राकृतिक कटाव में दृष्टिगत एवं सतह पर बिखरे हुए पुरावशेषों के अध्ययन व विश्लेषण के उपरांत उत्खनन का प्रस्ताव भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग को प्रेषित किया गया था। उत्खनन की अनुमति की प्राप्ति के पश्चात प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक; वी.एस. वाकणकर पुरातत्व अनुसंधान संस्थान, भोपाल एवं संचालनालय पुरातत्व, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में गंभीरवा टोला में उत्खनन कार्य किया गया। स्थल की संस्कृति का पूरा अनुक्रम प्राप्त करने के उद्देश्य से जी.बी.टी.-प्रथम, जी.बी.टी.-द्वितीय एवं जी.बी.टी.-तृतीय नामक तीन निखात अलग-अलग टीलों पर उत्खनित की

गई। इन निखातों से प्राचीन बस्ती का एक पूर्ण सांस्कृतिक क्रम सुनिश्चित हुआ है। उत्खनन से पांच सांस्कृतिक कालों (नीचे से ऊपर की ओर I से V तक की संख्या) के वृतिक जमाव का परिज्ञान हुआ।[9] सांस्कृतिक काल I को I A और I B में विभाजित किया गया है। निखातों से प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर क्षेत्र का सांस्कृतिक कालानुक्रम निम्नानुसार हैं:-

क्र.	सांस्कृतिक काल	मुख्य पुरावशेष	अनुमानित तिथि
1.	I A	इस कालखण्ड में मृण्मूर्तियाँ, खिलौने, सीप व शँख, मनके, लघु अश्मोपकरण, हड्डी की वस्तुएँ, उत्तरी काले ओपदार मृदभाण्ड, काले और लाल मृद्भाण्ड, आहत सिक्के और सुगठित व सघन मिट्टी की परतों युक्त संरचनाएँ।	चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक
2.	I B	इस उपकालखण्ड में मृण्मूर्तियाँ, खिलौने, सीप व शँख, मनके, लघु अश्मोपकरण, हड्डी की वस्तुएं, मिट्टी के बर्तन (काले और लाल बर्तन) के साथ ही ताम्बे और लोहे की वस्तुएँ और पकी ईंटें।	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईसवी तक
3.	II	हड्डी के आभूषण व उपकरण, मृण्मूर्तियाँ, पकी मिट्टी के खिलौने, ताम्बे और लोहे के उपकरण व औजार और मृद्भाण्ड।	पहली शताब्दी ईसवी से दूसरी शताब्दी ईसवी तक
4.	III	मिट्टी के बर्तन, मृण्मूर्तियाँ, पकी मिट्टी के खिलौने, दीपक, काले और लाल बर्तन।	द्वितीय शताब्दी ईसवी से चौथी शताब्दी ईसवी तक
5.	IV	काले प्रलेप युक्त मृद्भांड (ब्लेक स्लिप्ड वेयर), पकी मिट्टी और पाषाण की चूड़ियाँ, लाल मृद्भांड, काले मृद्भांड।	चौथी शताब्दी से छठी शताब्दी ईसवी तक

चित्र -**1 :** निखात जीबीटी-**I**

उत्खनित पुरावशेष और भौतिक संस्कृतिः-

पुरातत्व विज्ञान बहुविषयक ज्ञान व विधाओं से संयोजित सुसम्पन्न विषय है जिसके अन्तर्गत मानव द्वारा प्रयुक्त भौतिक पुरावशेषों के आधार पर मानवीय संस्कृति एवं सभ्यता का पुनर्निमाण किया जाता है। मानव समाज अपने परिवेश में विविध पक्षों को समाहित किए हुए होता है। आमतौर पर मानव समाज को चार क्षेत्रों या पहलुओं में निरूपित किया जाता है, यथा - राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक। पुरातात्विक अन्वेषण एवं उत्खनन में मौटे तौर पर इन्ही चार क्षेत्रों से संबंधित सामग्री को प्रलेखित, विश्लेषित एवं व्याख्यायित किया जाता है। विवेच्य उत्खनन में तत्कालीन मानव समाज के इतिहास लेखन में सहायक विविध पक्षों को प्रकट करने वाले बहुसंख्यक पुरावशेष प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर मैकल पर्वत के समीपवर्ती क्षेत्र में प्राचीन मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यंजित किया जा सकता है। ईंटे, बर्तन, सिक्के, खिलौने, मनके, लिपि के प्रमाण, कीलें, हड्डी एवं हाथी दांत के आभूषण व औजार, मृण्मूर्तियां एवं विविध घरेलू सामग्री उत्खनन की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं।

पुरावशेष एवं तत्कालीन क्षेत्रीय राजनीतिक स्थिति:- यह क्षेत्र छठी शती ईसवीं से तीसरी शती ईसवीं तक मगध साम्राज्य के अन्तर्गत शासित रहा, मौर्योत्तर काल में देश में राजनीतिक विखण्डन हुआ एवं अनेक स्वतंत्र स्थानीय राज्यों का उदय हुआ। सम्पूर्ण देश में क्षेत्रीय शक्तियों ने अपने राज्य स्थापित किए जिनमें गणतंत्रीय, जनजातीय, नगर राज्य एवं स्थानीय राजतंत्र आदि थे। इस क्षेत्र में स्थानीय शासन का उदय हुआ। उत्खनन स्थल के समीप शिवलहरा में सात गुफाएँ प्रकाश में आयीं हैं जिनमें मौर्योत्तर ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख प्राप्त हुए हैं। शिलालेखों में इस क्षेत्र के स्थानीय शासक स्वामिदत्त के काल में शिवानंदी के परनाती शिवदत्त के नाती शिवमित्र के पुत्र वत्स गोत्र के मोग्गली के पुत्र मूलादेव द्वारा शिलागृह के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

लेखों के पाठ प्रथम लेखक के अनुसार निम्नानुसार हैं :

चेरी गोदड़ी गुफा में लेख : 'सिवानंदि पनतिकेन सिवदत नतिकेन [सिवमित पुतेन]

सीतामढी गुफा में लेख : 'सिवानंदि पनतिकेन सिवदत नतिकेन सिवमित पुतेन वछेन म [मो] गलिपुतेन मूलदेवेन अमबि [बे] न सिलागह कारिता'

दुर्वासा गुफा में लेख: 'सामिदते राजकरयंतम्हि सिवानंदि पनतिकेन सिवदत नतिकेन [सिवमित पुतेन वछेन] मोगलिपुतेन [मूलदेवेन] अमबेन पुराबुधवने रोपापिता'

गुफाओं में गुप्तकालीन ब्राह्मी और शँख लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में आहत पद्धति में टंकित दो सिक्के प्राप्त हुए हैं एक सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में शिवदत्त का नामोल्लेख है (चित्र-2)। सिक्के पर त्रिरत्न का अंकन भी उल्लेखनीय है।

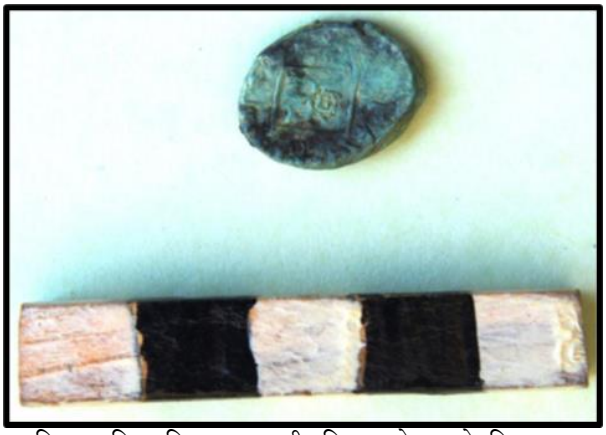

चित्र-**2 :** त्रिरत्न चिन्ह युक्त स्थानीय सिक्का, लेख- रञो (शिव)..दत्त

उत्खनन में उत्तरी चमकीली मृदभाण्ड परम्परा के बर्तनों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं जो राजसी बर्तन के द्योतक माने जाते हैं। मौर्य साम्राज्य के अंग के रहते हुए यहाँ के अधिकारी इस परम्परा परिचित हुए होगें कालान्तर में स्वतंत्र सत्ता स्थापित होने पर मृदभाण्ड परम्परा प्रचलन में रही होगी।

पुरावशेषों में प्रतिबिम्बित सांस्कृतिक जीवनः- मानव समाज की जीवन-चर्या से संबंधित समस्त पक्ष यथा रहन-सहन, खान-पान, भाषा-लिपि, धर्म-परम्परा, शिल्प-वास्तुकला आदि लक्षण संस्कृति के अन्तर्गत समाहित होते हैं। पुरातात्विक अवशेषों के रूप में प्राप्त ईंट, मृदभाण्ड, औजार, उपकरण, खिलौने, अलंकरण सामग्री आदि पुरासामग्रियॉ तत्कालीन मानव के जीवन यापन में प्रयुक्त होती थीं। इनके अध्ययन से सांस्कृतिक पक्षों को विश्लेषित व व्याख्यायित किया जाता हैं। उत्खनन में प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर इस क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्ष उद्घाटित हुए हैं जिनका परिचय निम्नानुसार हैः

आवास नियोजनः- गम्भीरवा टोला उत्खनन से प्राप्त प्रथम सांस्कृतिक कालखण्ड में किसी वास्तु संरचना के अवशेष प्रापत नहीं हुए हैं, यहाँ से लाल मृद्भांडों के टुकड़े अवश्य प्राप्त हुए हैं। संभवतः उसकालखण्ड कच्चे मकान या मिट्टी के मकान निर्मित किए जाते रहे होगें। उत्खनन में नियोजित तीनों निखातों में प्रथम शती से गुप्त काल तक की आवासीय संरचनाओं के अवशेष प्राप्त हुए है। विभिन्न कालों में प्रयुक्त की गई कच्ची एवं पकी ईंटें प्राप्त हुई हैं। जी. बी. टी.- **I** में कालखण्ड- **I B** से **39 x 25 x6** सेमी माप की ईंटें मिली हैं, जो कुषाण काल की हैं (चित्र **-3)**। कालखण्ड-**II** से गुप्तकालीन ईंटें प्राप्त हुई हैं (चित्र **-4)**। गंभीरवा टोला की खुदाई से **22 x 16 x 5** सेमी माप वाली ईंटें भी प्राप्त हुयी थीं। जी. बी. टी.- **I** के पश्चिम की ओर वाले खंड में **30 x 16 x 7** सेमी आकार की ईंटें सेक्शन में ही पाई गई हैं जो गुप्तकालीन हैं। उत्खनन सीमित क्षेत्र में सांस्कृतिक कालानुकंम निर्धारण के उद्देश्य से किया था अतः निखातों से बृहत संरचना को प्राप्त नहीं किया जा सका लेकिन विभिन्न मापों की ईंटों से स्पष्ट है कि विभिन्न कालों में आवासीय निर्माण किया जाता था। सीमित अवशेषों से स्पष्ट है कि यह निर्माण अभिजात्य वर्ग के लिए ही किया जाता होगा अन्य सामान्य जन के आवास लकड़ी, मिट्टी और घास-फूस से ही निर्मित किए जाते रहे होगें। जी. बी. टी. **-I** के द्वितीय सांस्कृतिक कालखण्ड में घर की ईंटों एवं चबूतरे के अवशेष प्राप्त हुए हैं। लाल रंग की ईंटों से बने स्तम्भ की निचली आधारनुमा संरचना इसी लेयर क्रमांक चार से जुड़ी हुई पाई गई है। निखात के दक्षिणी भाग की ओर ईंटों की एक संरचना मिली है। इस निखात के दक्षिण और उत्तर कोने में लगभग एक मीटर ऊँचाई की दीवार मिली है।

चित्र-3**:** कुषाणकालीन ईंटे

चित्र-4**:** गुप्तकालीन ईंटें

दीवार में ईंटों की दो श्रंखलाएं हैं। ईंटों का मापन **39 x25 x 6** सेमी.। इस लेयर से प्रतिवेदित किए गए ईंटों के टुकड़ों को **36 x 21 x 6** सेमी मापा गया। जबकि कुछ अन्य ईंटों की माप **24 x 18 x 6** सेमी पाई गयीं।

तृतीय सांस्कृतिक कालखण्ड मकानों की संरचना के चरण के रूप में पाया गया है। इस स्तर से गुप्त काल की संरचना प्राप्त हुई है। साथ ही पशु और मानव की मूर्तियाँ भी इस स्तर से प्राप्य हैं। इस स्तर की विशिष्टता लाल रंग के मृद्भाण्ड हैं। इस जमाव की मिट्टी ढीली और उसका रंग पीला है। इसी काल से घर में पत्थर और ईंटों से काम शुरू हो गया था। विभिन्न मापों ईंटें की इस स्तर से मिलीं हैं। इस स्तर से पत्थर की संरचनाएँ निखात के पश्चिमी और पूर्वी खंड की ओर पाई गई थीं। उपयोग किए गए पत्थरों का अधिकतम आकार **16 x 23** सेमी है।। निर्माण सामग्री में पत्थर, पकी हुई ईंटें और पत्थर की टाइलें शामिल हैं। कुछ घरों में पकी-ईंटों से निर्मित ढकी हुई जल निकासी व्यवस्था थी जो गुप्त काल की विशिष्टता है।

केवई नदी के तट पर सहरगडई टीला, जो क्षेत्र में सबसे ऊंचा है, के शीर्ष स्तर पर जी.बी.टी. **-II** निखात को लिया गया था। इस निखात के उत्खनन से मौर्योत्तर और गुप्त काल के विभिन्न आकृतियों और आकारों के बड़े भंडारण पात्र और ईंटें प्राप्त हुई हैं। इस क्षेत्र के सांस्कृतिक क्रम को जानने के लिए उत्तर दिशा में छह मीटर तक एवं दक्षिण दिशा में भी छह मीटर तक की निखात को डाला गया। उत्खनन स्थल से प्रतिवेदित किए गए ईंट के टुकड़ों को **36 x 21 x 7** सेमी मापा गया। जबकि कुछ अन्य ईंटें **24 x 18 x 6** सेमी मापी गई।

सहरगडई टीले पर जी.बी.टी.- **II** के उत्खनन में दो वलय कूप का एक युग्म प्राप्त हुआ है, जो एक मीटर की दूरी पर निर्मित किया गया था। (चित्र **5-6)** सभी जमावों के पुरानी बसाहट को नुकसान पहुँचाए बिना निखात को गहराई में उत्खनित किया गया। ये वलय कूप बड़े मिट्टी के छल्लों या वलय से निर्मित होते हैं, जिन्हें एक के ऊपर एक रखा जाता था। ये संभवतः सोख्ता गर्त (सोक-पिट) के रूप में प्रयुक्त होते रहे होंगे। उत्तरी सोक-पिट में तीन वलय थे, लेकिन उनमें से ऊपरी तीन टूट गए थे। दक्षिणी सोक-पिट में दो वलय थे जो एक के ऊपर एक रखे हुए थे। निचली रिंग के रिम पर ऊपरी रिंग का आधार टिका होता है। यह वलय कूप कुषाण कालीन प्रतीत होते हैं। वलय कूपों की ऊंचाई प्राय **1.6 0** मी है जिन्हें एक के ऊपर पकी मिट्टी की वलयों को संयोजित करके बनाया गया था। प्रत्येक वलय **76** सेंटीमीटर लंबी और **23** सेंटीमीटर ऊंची है (चित्र **5)**। इन वलय कूपों में वलयों की संख्या संभवत: **10** थीं जिनमें से संप्रति **7-8** वलयें सुरक्षित दिखाई देती हैं।

चित्र 5 : वलय कूप

चित्र 6 : वलय कूप

मृद्भाण्ड - उत्खनन में विविध प्रकार व आकार के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्राप्ति उत्तरी काले चमकीले की है जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व से भारत में प्रचलित हुए थे। यह मृद्भाण्ड शुंग -कुषाण काल तक प्रचलन में रहे। उक्त मृद्भाण्ड परम्परा आमतौर अभिजात्य वर्ग से संबंधित मानी जाती है। गम्भीरवा टोला उत्खनन में यह बर्तन प्राप्त हुए हैं जो यहाँ के राजसी या समृद्ध परिवार के उपयोग से संबंधित प्रतीत होते हैं (चित्र **7-8)**। इसके साथ ही रेड-स्लिप्ड तथा बर्निश्ड रेड वेयर तुलनात्मक रूप से मात्रा में अधिक हैं। कुछ धूसर मृद्भाण्ड भी इस स्तर से संबंधित हैं। गम्भीरवा टोला के मिट्टी के लाल बर्तनों को बारीकी से गढ़ा गया है। बर्तनों को तैयार करने के लिए तेज पहिये का उपयोग किया गया है जैसा कि कुछ चिह्नों से संकेत मिलता है। इन बर्तनों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मिट्टी में अशुद्धि है और ऐसा प्रतीत होता है कि बर्तन कम ताप पर पकाये गये है। इसलिए इनका मूल भाग हल्का लाल, किरकिरा और झरझरा पाया गया। इन बर्तनों की बाहरी सतह पर स्लिप एवं पालिश दोनों ही हैं। कुछ बर्तनों में पालिश आंतरिक पक्ष और बाहरी किनारों के एक हिस्से तक ही सीमित है। कुछ बर्तनों में बाहरी ओर भी पालिश पाई गई है। लाल बर्तन के कटोरे, थाली और तश्तरी भी इसी स्तर से प्राप्त हुए हैं। उत्तरी काली ओपदार मृद्भाण्ड परम्परा के बर्तन प्रथम सांस्कृतिक के द्वितीय चरण से प्राप्त नहीं होते है अर्थात इनका प्रचलन बंद हो गया था। संभवतः मौर्य साम्राज्य के अंग रहते हुए मौर्य अधिकारियों द्वारा प्रयुक्त बर्तनों का प्रचलन साम्राज्य पतन के साथ ही बन्द हो गया। (चित्र **9-10)**

चित्र-7 : काले पॉलिश किए हुए मृद्भाण्ड

चित्र-8 : उत्तरी काले ओपदार पात्र

जीबीटी - **I** उत्खनन के संग्रह में तीन प्रकार के कटोरे उपलब्ध हुए हैं- चौड़े, मध्यम और छोटे। उनके किनारे चपटे हैं और उनमें रस्सी या किसी अन्य उपकरण के निशान हैं। कुछ मोटे लाल बर्तन के कटोरे कम ताप पर पकने के कारण रंग कालापन लिए हुए दीखता है।

चित्र-9 : हल्के लाल झरझरे बर्तन

चित्र-10 : लाल बर्तन

द्वितीय सांस्कृतिक कालखण्ड के मृद्भाण्ड - इस चरण में मिट्टी के बर्तनों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा जाता है। पहले चरण की तुलना में इस चरण में मिट्टी के बर्तनों का प्रतिशत बढ़ जाता है। इस चरण में भी लाल रंग के बर्तन प्रचलन में रहे। कुछ पुराने आकार व आकृतियाँ अभी भी जारी रही लेकिन इस अवधि में कई नई आकृतियों का भी परिचय मिलता है। लाल रंग की स्लिप में चौड़े मुंह वाले बर्तन का टुकड़ा उल्लेखनीय है इसके किनारे बाहर निकले हुए हैं।

तृतीय सांस्कृतिक कालखण्ड के मृद्भाण्ड

तृतीय कालखण्ड के मृद्भाण्ड खंडो के प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं-

1. लाल रंग के बड़े गले के जार के टुकड़े
2. लाल, किरकिरे और समान रूप से ताप में पके हुए टुकड़े
3. बारीक लाल स्लिप के साथ एक कैरिनेटेड हांडी का टुकड़ा (चित्र **11**)
4. बर्तन लाल रंग के साथ मोटे, अपरिष्कृत और झरझरे बर्तनों के टुकड़े
5. **5.**उच्च गर्दन वाले जार के कुछ टुकड़े
6. धूसर रंग के पात्र (चित्र **12**)

चित्र-11 : लाल मृद्भाण्ड, लघु घट पात्र

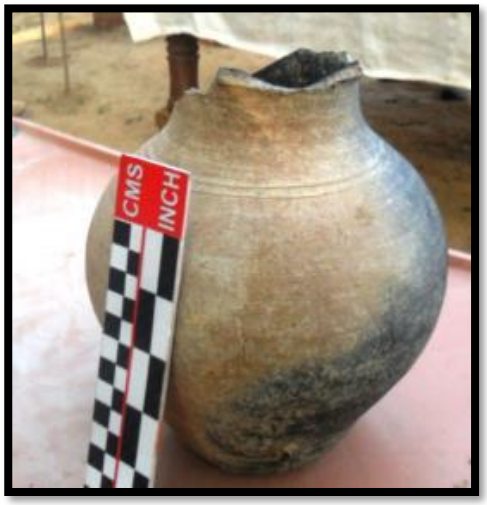

चित्र-12 : धूसर मृद्भाण्ड, घटकलश पात्र

चतुर्थ सांस्कृतिक कालखण्ड के मृद्भाण्ड-

चतुर्थ कालखण्ड के मृदभाण्डों में चौड़े मुंह के कटोरे (जो संभवतः घी व दही आदि रखने के लिए प्रयुक्त होते रहे होंगे) खुले मुंह के कटोरे, उथले प्याले, घट पात्र एवं तश्तरियाँ मुख्य हैं। (चित्र **13-16)** इनके अतिरिक्त संकीर्ण गले के गोलाकार बर्तन, जिनके किनारे बाहर निकले हुए हैं अन्य पात्र प्रकार हैं। ये बर्तन लाल रंग के हैं और अच्छी तरह से पकाए हुए हैं। नांद के कुछ टुकड़े भी उल्लखनीय हैं, जिनके किनारे बाहर की ओर निकले हुए हैं, और दोनों तरफ का रंग लाल है। इन नांदों का गढ़न मोटा, झरझरा और किरकिरा है यद्यपि पात्र अच्छी तरह पके हुए हैं। इसी स्तर से कुछ छोटे - छोटे पात्र मिले हैं जो संभवतः पूजा में प्रयुक्त होते रहे होंगे (चित्र **17)**। एक छिद्रयुक्त पात्र भी मिला है जिसका प्रयोग संभवतः पूजा-अभिषेक आदि में होता होगा। (चित्र **18)**

पाषाण से निर्मित पुरावशेष: निखातों से विभिन्न अर्द्धकीमती पत्थर के टुकड़ों की प्राप्ति हुई है। प्रस्तर की गोलियाँ, प्रस्तर-मनके, गोफन-पाषाण, मूसल, पत्थरों से सजाए गए वास्तुशिल्प के टुकड़े, पत्थर के ढक्कन, अलंकृत चौकोर पाषाण-फलक, सिल-बट्टे आदि भी उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। एक विशिष्ट पाषाण चौकी भी प्राप्त हुई है। जिसका प्रयोग भी संभवतः चन्दन या कोई खाद्य-सामग्री पीसने में प्रयोग होता रहा होगा (चित्र **19-20)**। उत्खनन के दौरान विभिन्न खनिजों के टुकड़े भी स्थल से निकाले गए हैं। स्थल से एक गोलाकार पत्थर भी प्रलेखित किया गया है। कीमती और अर्द्ध-कीमती पत्थरों के कुछ टुकड़ों के साथ-साथ भूरे और पारदर्शी छोटे ब्लेड भी प्राप्त हुए है। टीले के निचले स्तरों से खुदाई में माइक्रोलिथ भी मिले हैं। उत्खनन में प्रथम काल से लेकर चतुर्थ काल तक अनेक अर्द्ध-कीमती पत्थरों के मनके एवं चूड़ियाँ भी प्राप्त हुई हैं। (चित्र **21-22)** इनका उपयोग समाज में आभूषण के रूप में किया जाता था। मूसल, पत्थरों से सजाए गए वास्तुशिल्प के टुकड़े तथा वर्गाकार सजाए गए पत्थर तृतीय कालखण्ड से प्रलेखित हैं।

हाथी दांत एवं वस्तुएँ:- जी.बी.टी. **I** और जी.बी.टी. **II** में हाथीदांत की वस्तुओं के पांच टुकड़े मिले हैं जिन्हें एक ही स्तर से एकत्र किया गया है। इन वस्तुओं को लगभग सभी कालखण्डों में समान रूप से प्राप्त किया गया है। जी.बी.टी. **I** के पास हाथीदांत का टूटा हुआ चूड़ी का टुकड़ा प्राप्त हुआ था। साथ ही हाथीदांत की अंजन-शलाकाएँ जी.बी.टी. **II** के तृतीय कालखण्ड में पाई गईं हैं।

धातु की वस्तुएं:- खुदाई के दौरान प्राप्त धात्विक अवशेषों की कुल संख्या **75** है। अधिकांश वस्तुएँ लोहे की है, जिसकी संख्या **65** हैं और उसके साथ **10** तांबे की वस्तुएँ भी प्राप्य हैं। शुंग काल के एक गोलाकार तांबे के सिक्के और तांबे की अंगूठी की प्राप्ति उल्लेखनीय है। ताम्बे की विभिन्न आकार की अंजन-शलाकाएँ और तांबे की एक लटकन भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं (चित्र **22-23)**। तांबे की सामग्री विभिन्न कालखण्डों से समबद्ध है जिनका प्रयोग विभिन्न घरेलू उपयोगों में किया जाता था।

लोहे की वस्तुएं: लोहे से निर्मित तीर, भाले, शाफ्ट के टुकड़े, हंसिये, खुराचानियाँ, छिद्रक, छेनी, चाकू और गोलाकार छल्ले उत्खनन में प्राप्त किए गए हैं (चित्र **24-25)**। उत्खनन से **176** लोहे की वस्तुएँ व औजार प्राप्त हुए हैं। इनमें कई आकारहीन टुकड़े भी शामिल हैं। वस्तुओं में कीलें, हुक, दरांती, भाले के फाल और घरेलू उपयोग के अन्य उपकरण सम्मिलित हैं। प्रथम सांस्कृतिक कालखण्ड के स्तरों से कोई लोहे की वस्तु प्राप्त नहीं हुई

थी। द्वितीय और तृतीय सांस्कृतिक कालखण्ड में काफी बड़ी संख्या में लौह वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। तृतीय सांस्कृतिक कालखण्ड से भी लौह उपकरणों की प्राप्ति प्रलेखित की गई हैं। लोहे की सभी वस्तुएँ ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से छठी शताब्दी ई. तक के कालखण्ड से संबंधित हैं।

चित्र-13 : लाल बर्तन, कटोरे

चित्र-14 : लाल बर्तन, लघु घट

चित्र-15 : धूसर रंग का कटोरा

चित्र-16 : लाल रंग के कटोरे

चित्र-17 : लाल बर्तन, छोटे मुँह के लघु पात्र

चित्र-18 : लाल बर्तन, छिद्रयुक्त घटकलश

चित्र-19 : पाषाण चौकी, लोढे (Muller)

चित्र-20 : माइक्रोलिथ

चित्र-21 : मनके

चित्र-22 : चूड़ी

चित्र-23 : अंजनशलाका

चित्र-24 : तांबे की लटकन

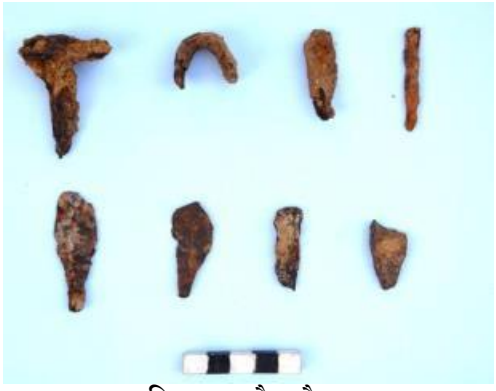

चित्र-25 : लौह औजार

चित्र-26 : लौह वलय

मृण्मय (टेराकोटा) खिलौने:- उत्खनन में टीले से शुंग-कुषाण काल का पकी मिट्टी की मानव सिर की एक लघु प्रतिकृति प्राप्त हुई है। कूबड़ वाले बैल के रूप में मृण्मय खिलौने और हिरण भी स्थल से उत्खनित किए गए हैं। जी.बी.टी.- **I** से कई टेराकोटा स्टंप की सूचना प्राप्त हुई है। कुछ छिद्रित लघु जार प्रतिवेदित किए गए हैं। घरों की छतों को अलंकृत करने में प्रयुक्त होने वली शंक्वाकार मुकुट जैसी संरचनाएँ भी स्थल से अच्छी संख्या में प्रलेखित की गई हैं। इस तरह की शंक्वाकार आकृतियों का प्रयोग आज भी झोपड़ियों और आवास-स्थलों की छतों पर देखा जा सकता है। उत्खनन में मनुष्यों, पशुओं और पक्षियों की भी कुछ मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो प्राय: सभी खंडित हैं। ये आकृतियाँ कुशलता से हस्तनिर्मित हैं। जानवरों और पक्षियों की आकृतियों को सुगढ़ता से निर्मित किया गया है जिसमें तत्कालीन मृण्मय कला प्रस्फुटित होती है। गंभीरवा टोला निखात क्र. जी.बी.टी.- **I** और जी.बी.टी.- **II** से **77** टेराकोटा वस्तुएं मिलीं हैं। खुदाई में विभिन्न मृण्मय चक्रिकाएँ (टेराकोटा डिस्क) भी मिली हैं। इनका उपयोग संभवतः खिलौने के रूप में किया जाता था। हो सकता है कि बच्चों द्वारा छिद्रकों के माध्यम से दोहरे धागे का उपयोग करके उनका उपयोग किया गया हो, जैसा कि आज किया जाता है। तीसरे सांस्कृतिक कालखण्ड में टेराकोटा के मनके और छिद्रित डिस्क उपलब्ध हुए हैं। बच्चों के खिलौनों के समान कुछ छोटे बर्तन और कटोरे भी प्राप्त हुए हैं। जी.बी.टी.- **I** के चतुर्थ कालखण्ड से देवी की मृण्मय-मूर्तियाँ मिली हैं। सांचे द्वारा तैयार की गयी महिला के सिर की प्रतिकृति उल्लेखनीय उपलब्धि है। लाल रंग की यह मृण्मूर्ति अच्छी तरह से पकाई गयी है। मूर्ति के आंख-कान टूटे हैं किन्तु आकृति में लंबी नाक और सुंदर होंठ दर्शित हैं। उभरे गालों के साथ अंडाकार चेहरा बनाया गया है।

आठ से अधिक पशु-पक्षियों और मानव की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनमें से **2** प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की हैं और **6** बाद की अवधि की हैं। स्थल से टेराकोटा वृषभ, गाय और खोखले पक्षी प्रलेखित किए गए हैं। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान वृषभ की पूजा एक प्रमुख पंथ प्रतीत होता है। यहाँ के प्राचीन लोगों के नामों में शिव नाम का प्रयोग बहुत हुआ है। पुरावशेषों की उपलब्धता भी शैव मतावलंबियों की और संकेत करती है।

आर्थिक जीवन: अनूपपुर जिले के इस क्षेत्र में प्राचीन काल से ही आर्थिक स्थिति समुन्नत थी। कृषि कार्य में प्रयुक्त तीक्ष्ण उपकरण , भाले, दण्ड के टुकड़े, हंसिया, खुरचनी, छिद्रक, छेनी, चाकू, गोलाकार छल्ले, कीलें, हुक, दरांती, तलवारें, भाले आदि लौह औजार उत्खनन में प्राप्त हुए हैं जो उन्नत अर्थवयवस्था के द्योतक है। तांबे के आभूषण क्षेत्र के लोगों की सामान्य से बेहतर स्थिति को दर्शाते हैं। यहाँ से प्राप्त सिक्कों से प्रकट होता है कि इस क्षेत्र में व्यापार व व्यवसाय समुन्नत स्थिति में था (चित्र **26-28**)। प्राचीन काल में सामान्य स्तर का घरेलू व्यापार वस्तु विनिमय पर किया जाता था लेकिन सिक्कों के प्रचलन से ध्वनित होता है कि व्यापार अन्तरक्षेत्रीय स्तर पर किया जाता था। यहाँ से उत्खनन में आहत सिक्के के साथ ही स्थानीय शासक का सिक्का भी प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट है कि चौथी शती ईसा पूर्व से द्वितीय शती ईसवी तक इस क्षेत्र में व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था गतिशील अवस्था में थी। अनेक मृण्मूर्तियाँ, खिलौने एवं खेल सामग्री का प्राप्त होना सम्बंधित कालखंडों में इस क्षेत्र में बेहतर खुशहाल जीवन को अभिव्यक्त करता है।

चित्र-27 : तांबे की अंगूठी और आहत सिक्के

चित्र-28 : आहत सिक्का

चित्र-29 : स्थानीय सिक्के अग्रभाग रओ (शिव.... दत्त) व त्रिरत्न पृष्ठभाग पर नदी का अंकन

धार्मिक जीवन: इस क्षेत्र में किस धर्म के लोग जीवन यापन करते थे इसके पक्ष में कोई मूर्तिशिल्प संबंधित अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं लेकिन संभवतः मौर्य काल के पूर्व यहाँ ब्राह्मण धर्म प्रचलित रहा होगा। कालान्तर में मौर्य साम्राज्य के पश्चात यहाँ संभवतः बौद्ध धर्म भी प्रचलित रहा होगा। इसके पक्ष में उत्खनन स्थल के समीप शिवलहरा में उत्कीर्ण सात गुफाऐं हैं जिनमें कतिपय बौद्ध प्रतीक भी मिलते हैं। प्राप्त स्थानीय सिक्के में त्रिरत्न का अंकन भी बौद्ध धर्म के प्रभाव की और संकेत करता है। परन्तु द्वितीय शताब्दी में यहाँ शिवानंदी, शिवदत्त, शिवमित, मूलादेव अम्बा जैसे नामों की गुहा अभिलेखों में प्राप्ति से शैव धर्म की प्रधानता का भी अनुमान होता है।

निष्कर्ष:

गम्भीरवाटोला में किए गए उत्खनन से मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के प्राचीन इतिहास एवं क्षेत्रीय संस्कृति पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। इस क्षेत्र में प्राग्मौर्ययुग से गुप्तकाल तक संस्कृति निर्बाध रूप से प्रवाहमान रही है। यह क्षेत्र राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न था। सिक्कों की प्राप्ति व्यापार- व्यवसाय की समुन्नत स्थिति को पुष्ट करती है। लौह औजार उत्खनन में प्राप्त हुए हैं जो बेहतर अर्थवयवस्था के द्योतक है। तांबे के आभूषण क्षेत्र के लोगों की सामान्य से बेहतर स्थिति को दर्शाते हैं। चौथी शती ईसा पूर्व से द्वितीय शती ईसवी तक इस क्षेत्र में व्यापार आधारित अर्थव्यवस्था गतिशील अवस्था में थी। अनेक मृण्मूर्तियों, खिलौनों एवं खेल सामग्री की प्राप्ति सम्बंधित कालखंडों में समुन्नत और समृद्ध जीवन को अभिव्यक्त करती है।

संदर्भ -

[1] मालपानी, जे.एन.; अनूपपुर जिले का पुरातत्व, संचालनालय, पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, मध्य प्रदेश, भोपाल, **2010**, पृ. **7-11**

[2] इण्डियन आर्क्योलॉजी : ए रिव्यू, **1962-63**, पृ. **11; 1958-59**, पृ. **26-27; 1960-61**, पृ. **173**

[3] इण्डियन आर्केयोलाजी: ए रिव्यू ,**1961-62**, पृ. **100, 1962-63**, पृ. **69, 1964-65**, पृ. **24, 1965-66** , पृ. **142-43**

[4] चढार, मोहन लाल; अमरकंटक क्षेत्र का पुरावैभव, एसएसडीएन, प्रकाशन नई दिल्ली, **2017**, पृ. **11-22**

[5] शर्मा, आर. के.; मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ मध्य प्रदेश, हिंदी ग्रंथ अकादमी,

[6] भोपाल, **2010**, पृ. **33**

[7] श्रोत्रिय आलोक और चढ़ार एम.एल.; अमरकंटक क्षेत्र के सर्वेक्षण व उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषो का विश्लेषण",

[8] मध्य भारत की कला संस्कृति एवं पुरातत्व, नई दिल्ली, **2017**, पृ. **188-189**

[9] चढार, मोहन लाल; हिस्टोरिकल रिमेन्स ऑफ अनूपपुर डिस्ट्रिक, प्राग्समीक्षा, अक्टूबर, **2014**, पृ. **135**

[10] गुरु, एस.डी., शहडोल जिला गजेटियर, भोपाल, **1994**, पृ. **37-38**

[11] आलोक श्रोत्रिय, डॉ. मोहन लाल चढार एवं डॉ जिनेन्द्र कुमार जैन. दारसागर क्षेत्र (जिला अनूपपुर, मध्य प्रदेश) के पुरातात्त्विक समन्वेषण एवं उत्खनन का विश्लेषणात्मक अध्ययन. **Int J Hist 2022;4(2):169**

How to Cite this Article?

Shrotriya, A., Jain, J. K., & Chadhar, M. L. (2022). Material culture revealed from the antiquities obtained from the excavation of Gambhirwa Tola (Anuppur, M.P.): गम्भीरवा टोला (अनूपपुर, म.प्र.) उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों से उद्घाटित भौतिक संस्कृति. *Research Review Journal of Social Science*, *2*(1), 39–49. https://doi.org/10.31305/rrjss.2022.v02.n01.007